

23

वर्ष : 2019-20

ISSN : 0976-5778

ईसुरी

बुन्देलखण्ड के आधुनिक साहित्यकारों पर केन्द्रित



14. भीत मेरे, दो विदा, मैं जा रहा हूँ : कांतिकुमार जैन	- प्रो. नरेन्द्र सिंह	69
15. आलोचक, नाटककार : पं. लोकनाथ द्विवेदी 'सिलाकारी'	- राहुल सिलाकारी (पत्रकार)	73
16. रमेशदत्त दुबे : एक जीवन्त व्यक्तित्व	- महेशदत्त अग्निहोत्री	76
17. बुन्देली ग़ज़ल की राष्ट्रीय पहचान : महेश कटारे 'सुगम'	- प्रो. बहादुर सिंह परमार	78
18. साहित्य साधक : डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त बरसैया	- डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय	82
✓ 19. बुन्देली के अद्वितीय संपादक एवं संकलनकर्ता : प्रो. बलभद्र तिवारी	- डॉ. राजेन्द्र यादव एवं प्रदीप कुमार सौर	87
20. वृंदावन राय 'सरल' के काव्य में समाज दर्शन	- डॉ. अवधेश कुमार	92
21. संवेदनात्मक यथार्थ के चितरे : शिवकुमार श्रीवास्तव	- अभिषेक दांगी	98

बुन्देलखण्ड : इतिहास, कला एवं संस्कृति केन्द्रित मूल्यांकन

● इतिहास

22. अमर शहीद मधुकर शाह बुन्देला	- भुवनभूषण देवालिया	103
23. 1857 की क्रान्ति और बुन्देलखण्ड की धरती	- डॉ. अरविन्द कुमार एवं डॉ. हिमांशु कुमार	107
✓ 24. इतिहास, जौहर और बुनकरों की चन्देरी	- डॉ. राजेन्द्र यादव	111

● कला

25. सागर का कला वैभव	- प्रो. विवेकदत्त झा	117
26. बुन्देलखण्ड एरण का मूर्तिशिल्प एवं प्राचीन लोकसंस्कृति	- प्रो. नागेश दुबे	123
27. नवागढ़ का प्राचीन एवं अर्वाचीन स्वरूप	- ब्रह्मचारी जयकुमार निशांत एवं राजीव कुमार जैन	130

● संस्कृति

28. लोकनाट्य परम्परा और बुन्देली संस्कृति	- डॉ. गंगाधर झा	135
29. तुलसीदास के साहित्य में बुन्देली लोकजीवन	- पद्मश्री डॉ. लक्ष्मीनारायण दुबे	138
30. बुन्देलखण्ड की प्राचीन नदियाँ	- एस.के. पारिख	141
31. बुन्देली लोक गाथाओं का सांस्कृतिक स्वरूप	- डॉ. दुर्गेश दीक्षित	146
32. बुन्देलखण्ड का धार्मिक पर्यटन	- डॉ. गौरी खोटे	151

● परिशिष्ट

33. ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी : स्मरणीय साक्षात्कार	- प्रो. ऊषा भटनागर	156
34. बुन्देली लघुकहानी : 'बरौटी'	- ओमप्रकाश रिछारिया	159

बुन्देली के अद्वितीय संपादक एवं संकलनकर्ता : प्रो. बलभद्र तिवारी

डॉ. राजेन्द्र यादव एवं प्रदीप कुमार सौर*

आचार्य नंददुलारे वाजपेयी द्वारा 1956 में हिन्दी विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश में बुन्देली पीठ की स्थापना हुई थी। बुन्देली पीठ में आचार्य वाजपेयी के निर्देशन में आपने आरम्भ से ही बुन्देली भाषा के साहित्य का संकलन कर संपादन करना प्रारम्भ किया। बुन्देली साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि यही है कि बुन्देली की जो रचनाएँ परम्परागत रूप से बुन्देली लोक में मौखिक रूप से पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित और परिवर्तित होती आ रही थी उन रचनाओं के मूल रूप को बुन्देली पीठ के माध्यम से संरक्षित संपादित कर विद्वान मनीषियों द्वारा प्रकाशित किया गया। प्रो. बलभद्र तिवारी हिन्दी विभाग के छात्र से विभागाध्यक्ष तक के सफर में एक बड़े शोधकर्ता के रूप में कार्यरत रहे। आचार्य वाजपेयी के साथ वर्षों उन्हें काम करने का जो अवसर मिला उससे उनमें एक लेखक, संपादक, आलोचक और साहित्यक अन्वेषक के मूल्यवान व्यक्तित्व का उदय हुआ। आचार्य वाजपेयी के बाद हिन्दी-विभाग के विद्वान अध्यक्ष रहे भारतीय काव्यशास्त्र के मान्य आचार्य भगीरथ मिश्र का भी मार्गदर्शन और शास्त्रीयता के साथ आधुनिकता बलभद्र तिवारी को प्राप्त हुई थी, इन्हीं साहित्यिक संस्कारों की परणति उनके रचनात्मक एवं संवादकीय

व्यक्ति में साफ दिखाई देती है। बुन्देली पीठ के सचिव संपादक के रूप में बलभद्र तिवारी ने बुन्देली लोक में बिखरे बुन्देली के मूल्यवान साहित्य को संग्रह कर प्रमाणिक रूप में संपादित किया। आचार्य बलभद्र तिवारी द्वारा प्राचीन, मध्यकालीन लुप्त हो रहे बुन्देली साहित्य को अपनी साहित्यिक निष्ठा के चलते अथक परिश्रम कर संग्रहित कर संपादित किया। स्वामी अग्रदास जैसे भक्त कवि की अग्रदास ग्रंथावली का बुन्देली पीठ से संपादन प्रकाशन कर हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल की भक्ति धाराओं में खासकर रामभक्ति शाखा में एक नयी सांख्य भक्ति को जोड़ा। उन्होंने बुन्देली भाषा के महत्वपूर्ण लोक कवियों जैसे- बक्शीहंसराज, लाल कवि, ईसुरी, जगनिक आदि पर महत्वपूर्ण शोध कार्य भी करवाए।

डॉ. बलभद्र तिवारी ने आधुनिक बुन्देली साहित्य की रचनाशीलता को निजी रुचि और बुन्देली पीठ के हेतु को नयी दिशा दी। उन्होंने सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड के आधुनिक कवियों की रचनाओं एवं साहित्यिक जीवन परिचय को संग्रहित कर संपादित किया। आचार्य बलभद्र तिवारी के इस महत्वपूर्ण कार्य से बुन्देली लोक साहित्य के आधुनिक रचना संसार को

*हिन्दी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470003